Ref-No. GGVS-2021/21/153

कम दूध उत्पादन के प्रमुख कारण एवं निवारण

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र
गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

| गो आधारित जैविक कृषि को समर्पित |

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा प्रमाणित

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439 ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

कम दूध उत्पादन के प्रमुख कारण एवं निवारण

प्रमुख समस्याँ	कारण	निवारण
1. पीक दूध उत्पादन का कम (4–6 लीटर) होना पीक दूध उत्पादन – ब्याने के बाद के प्रथम 30–45 दिनों में किसी भी एक दिन का अधिकतम दूध उत्पादन पीक उत्पादन कहलाता हैं।	1.ब्याने के पूर्व दाना / बाँटा नहीं खिलाना। 2. नमक एंव खनिज मिश्रण नहीं खिलाना। 3. मादा पशुओं की प्रारम्भ से ही सुचारू देखभाल नहीं करना।	1. गाय/भैंस को ब्याने के दो माह पूर्व से ही प्रतिदिन 2 से 4 किलों दाना/बाँटा एवं 20 ग्राम शतावरी देना प्रारम्भ करें। 2. 30–50 ग्राम खनिज मिश्रण एवं 30 ग्राम नमक नियमित रूप से खिलायें।
2. एक ब्यांत में कम समय (6–7 माह) तक ही दूध देना।	1. केवल खल, चूरी या दलिया ही खिलाना, वह भी कम मात्रा में। 2. पशु आहार खिलाने में अनियमितता। 3. नमक एवं खनिज मिश्रण नहीं खिलाना।	1. सन्तुलित पशु आहार उचित मात्र में खिलावें। 2. खनिज मिश्रण एवं नमक नियमित देवें। 3. ब्याने के 10 दिन बाद एवं फरवरी, जून व अक्टूबर में अन्तः कृमि नाशक की दवा देवें। 5. पशुशाला स्वच्छ हवादार व सूखी रखें।
3. दो ब्यांत का अन्तराल ज्यादा (18 से 24 माह) होना। विशेष – पीक दूध उत्पादन में एक लीटर की वृद्धि से पूरे ब्यांत काल में 210 लीटर दूध उत्पादन बढ़ जाता हैं।	1. गाय/भैंस का समय पर हीट/जाग में नहीं आना। 2. बार–बार ग्याभिन करवाने पर भी ग्याभिन न होना। 3. गावों में उच्च गुणवत्ता युक्त सांड़ों की कमी।	1. गाय/भैंस को ब्याने के बाद 2–4 माह में वापस ग्याभित करावें। 2. गाँवों में उच्च गुणवत्ता युक्त सांड रखें। 3. खनिज मिश्रण एवं नमक नियमित रूप सें खिलावें। 4. कत्रिम गर्भाधान / आवेसिंच प्रोटोकोल की सुविधा कृषक के द्वार पर उपलब्ध करवाना। 5. बछड़े–बछड़ियों की प्रारम्भ से ही समुचित देखभाल करना।